PARIPEX - INDIAN JOURNAL OF RESEARCH | Volume-8 | Issue-8 | August-2019 | PRINT ISSN No. 2250 - 1991

ORIGINAL RESEARCH PAPER

Education

KEY WORDS:

जे. कृष्णमूर्ति के शैक्षिक विचारों की वर्तमान में प्रासंगिकता

डॉ. विष्णु कुमार — सहायक प्रोफेसर शिक्षा विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं

सारांश

जे. कृष्णमूर्ति क अनुसार सम्यक शिक्षा वह है जो मानव को पढ़ने–लिखने का ज्ञान, इंजीनियर, डॉक्टर, वकील इत्यादि व्यवसाय से संबंधी तकनीकी ज्ञान तथा कार्यकुशलता के साथ–साथ जीवन की अखंड प्रक्रिया का अनुभव करने में भी मनुष्य की सहायता करे। शिक्षा का उद्देश्य किन्हीं आदर्शों का अनुकरण करना नहीं है बल्कि उसका उद्देश्य बालक को वास्तविकता अर्थात् प्रकृति तथा आस–पास के वातावरण के साथ समन्वय स्थापित करके, भयरहित उत्तम जीवन निर्वाह करने के लिए तैयार करना है।

प्रस्तावना

हमारी शिक्षा प्रणाली में राष्ट्रीय भावना का सर्वथा अभाव है इसलिए समय–समय पर साहित्यकारों व शिक्षाविदों ने अनेक प्रकार के साहित्यों व कृतियों का सृजन करके शिक्षा के क्षेत्र में नीवन प्रगति की है। उन शिक्षाविदों में रामधारी सिंह दिनकर का नाम विशेष उल्लेखनीय है। जिस प्रकार सूर्य की रश्मियाँ अपा आलोक विकीर्ण कर पृथ्वी को दीप्तमय बना देती है उसी प्रकार कवि दिनकर ने अपनी प्रखर काव्य–रश्मियों से हिन्दी शिक्षा साहित्य को नव–चेतना के प्रकाश से आलोकित कर दिया। दिनकर ने अपने साहित्य में मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं पर अपना अनुभव बताया है। संस्कृति शिक्षा, इतिहास, दर्शन, काव्य और राजनीति सभी विषयों पर उन्होंने लिखा और हिन्दी को समृद्ध बनाया। दिनकर का काव्य और राजनीति सभी विषयों पर उन्होंने लिखा और हिन्दी को समृद्ध बनाया। दिनकर का काव्य प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से समाज से जुड़ा हुआ है, जिससे वे समाज व देश के विकास में अपना योगदान दे सके, जो मानवीय चेतना से परिपूर्ण है। रामधारी सिंह दिनकर अपनी साहित्यिक कृतियों के माध्यम से युग को प्रभावित करते हैं। उन्होंने अपनी प्रतिभा विचारों को कलात्मक अभिव्यक्ति देकर शाश्वत प्रदान करने की कोशिश की हैं। बालक कुंभकार की कच्ची मिट्टी की तरह होता है जिसे परिश्रम, लगन व समय प्रदान करके शीतलता प्रदान करने वाले सुंदर कुंभ के स्वरूप में ढाला जाता है जिस प्रकार सुंदर कुंभ को बनाने का श्रेय कुंभकार को जाता है उसी प्रकार उत्तम व्यक्तित्व वाले मानव के निर्माण का श्रेय शिक्षक को जाता है। जे. कृष्णमूर्ति ने शिक्षक के साथ–साथ माता–पिता विद्यालय व घर को भी बालक के उत्तम विकास के लिए उत्तरदायी माना है। जिड्डू कृष्णमूर्ति एक महान् सन्त, महान् चिन्तक महान् शिक्षाविद व त्यागी महापुरुष थे, उन्होंने अपना पूरा जीवन शिक्षा के चहुँमुखी विकास एवं समाज की सेवा में लगा दिया इसलिए उनके जीवन, उनके कार्यों एवं उनके शिक्षा संबंधी विचारों का संकलन, एवं प्रस्तुतीकरण निशिचत ही वर्तमान शैक्षिक समस्याओं के सन्दर्भ में बहुउपयोगी है।

समस्या का औचित्य :

चमत्कारिक वैज्ञानिक उपलब्धियों के होते हुए भी वास्तविक शान्ति व प्रसन्नता के अभाव में आज मूल रूप से समाज में परस्पर विरोध तथा अलगाव की स्थितियाँ हैं। मानवता अपने लक्ष्य से विमुख होती जा रही है। मूल रूप से अपने आपकी अभिव्यक्ति के अर्थ में सारा प्रयास ही सृजनात्मक है, लेकिन इस शक्ति को मानव नई खोजों में जो उपयोग में नहीं ला पाता है तो भ्रमित होता है जिससे संहार की स्थिति हो जाती है। मानव आज दोराहे पर है एक मार्ग भौतिक, सांस्कृतिक, नैतिक वह आध्यात्मिक उन्नति की ओर ले जाने वाला है। आज मूल्यों का संकट व्यक्ति के स्वयं में श्रद्धा व विश्वास तथा ज्ञान न होने के कारण है। आज की शिक्षा की सबसे ज्वलन्त समस्या यही है कि व्यक्ति शिक्षित हो जाने पर भी व्यवहारिक रूप से पशुत्व का आचरण करता है। आज की शिक्षा मुनष्य को बौद्धिक विकास तो कर रही है परन्तु उसके समग्र व्यक्तिव के विकास में असमर्थ सिद्ध हो रही है। जे. कृष्णमूर्ति के शिक्षा दर्शन में वर्तमान शैक्षिक समस्याओं को दूर करने की क्षमता दृष्टिगत होती है। इसलिए शोधार्थी अपने शोध के माध्यम से से महान शिक्षा शास्त्री एवं शिक्षा विद श्रद्धेय जे. कृष्णमूर्ति के शैक्षिक विचारों को और जो उनका शिक्षा के क्षेत्र में योगदान है, वर्तमान समय में समाज के समान उजागर करना चाहती है जिससे आज भारत के हर समाज के लोग गए उनकी शैक्षिक उपलब्धियों को पढ़े और उनके अपने जीवन में उतारकर वर्तमान समस्याओं को दूर करन का प्रयास कर सके। इसलिए इस विषय पर शोध कार्य किया जा रहा है।

समस्या कथन :– 'जे. कृष्णमूर्ति के शैक्षिक विचारों की वर्तमान में प्रासंगिकता'
शोध के उद्देश्य :– जे. कृष्णमूर्ति के शिक्षा संबंधी विचारों का अध्ययन करना ।
शोध विधि :– दार्शनिक एवं ऐतिहासिक अनुसन्धान विधि प्रयोग में ली गयी है।

जे. कृष्णमूर्ति के शिक्षा से सम्बन्धित विचार

स्वतंत्र चिंतन का विकास करना :– जे. कृष्णमूर्ति प्रकृतिवादियों की तरह बालक को स्वतंत्र छोड़कर स्वयं के अनुसार सीखने पर बल देते थे। वे बालक में अनुकरण की प्रवृति का विकास करने के खिलाफ थे।

समन्वयकारी दृष्टिकोण उत्पन्न करना :– जे. कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा को विचार एवं भावना में समन्वय स्थापित करने वाली होनी चाहिए। यदि हम सिर्फ पांडित्य प्रदर्शन के लिए या अच्छी नौकरी पाने के लिए शिक्षित हो रहे हैं तो हमारा जीवन खोखला व छिछला होगा। व्यक्तित्व का व्यक्तित्व विभिन्न इकाइयों से मिलकर बना होता है। जब इन इकाइयों के मध्य समन्वय नहीं हो पाता है तो उसका व्यक्ति खंडित हो जाता है। अतः शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति में समन्वयकारी दृष्टिकोण उत्पन्न करने वाला होना चाहिए जिससे व्यक्ति का समग्र रूप से विकास हो सके।

भय मुक्त मनुष्य का निर्माण करना –मनुष्य स्वयं को समझ नहीं पाता जिससे वह जीवन में आने वाली जटिलताओं, दुःखों व आकस्मिक आवश्यकताओं का सामना करने में स्वयं को असक्षम महसूस करता है इससे उसके जीवन मूल्यों का विघटन होता है तथा वह भय से आक्रान्त होकर अशांति व युद्ध की तरफ अग्रसर होता है। जे. कृष्णमूर्ति ने इसके लिए शिक्षा द्वारा ऐसे व्यक्तियों का निर्माण करने का कहा है जो भय से मुक्त हो।

मानवीय गुणों का विकास करना –जे. कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा इस प्रकार की होनी चाहिए जिससे व्यक्ति में मानवोचित गुणों का विकास हो सके। आज की शिक्षा व्यक्ति को पढ़ना–लिखना एवं विविध तकनीकी ज्ञान प्रदान कर केवल उसका बौद्धिक विकास करती है जिससे सिर्फ दुःखमय जीवन उत्पन्न हुए हैं। संकटमय व अशान्तिमय जीवन से बचने के लिए बालक में प्रेम, दया, सहानुभूति, संवेदनशीलता, सहयोग की भावना, संतोष, स्वनियंत्रण, जनकल्याण भावना इत्यादि भाव उत्पन्न करना शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए।

समग्र एकात्म व्यक्ति का विकास – आज की शिक्षा एक कार्य सक्षम यन्त्र, विशिष्ट ढाँचे के अनुसार चलने वाले व्यक्ति का निर्माण कर रही है। जे. कृष्णमूर्ति शिक्षा के द्वारा एक ऐसे व्यक्ति का विकास करना चाहते हैं जो किसी का अनुकरण न करने वाला हो बल्कि स्वयं स्वतन्त्र रूप से विचार करके योग्य चरित्र का निर्माण करे यही समग्र एकात्म व्यक्ति होगा।

अपने आप को शिक्षित करना – शिक्षा का अर्थ केवल अकादमीय विषयों के बारे में जानना नहीं है बल्कि अपने आपको शिक्षित करना है। सिर्फ किताबी विषयों को ही नहीं बल्कि मनुष्य की मनोवैज्ञानिक प्रकृति और संरचना को समझने में व्यक्ति का बौद्धिक, विकास करना भी शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए।

बालक की अन्तर्निहित शक्तियों को व्यवस्थित करना – ब्रह्माण्ड, प्रकृति सभी व्यवस्थित रूप से अपना कार्य करते हैं। जे. कृष्णमूर्ति के अनुसार मानव को भी अपना भीतरी जगत व्यवस्थित रखना चाहिए। जिससे वह भ्रान्त, अनिश्चित, दुश्चिन्ता और द्वन्द्व जैसे विकारों से न घिर पाये। व्यक्ति की भीतरी शक्तियों को व्यवस्थित करने में शिक्षा एक महती भूमिका निभा सकती है इसलिए शिक्षा का उद्देश्य बालक की अन्तर्निहित शक्तियों को व्यवस्थित करना होना चाहिए।

सहचिंतन की कला का विकास करना – जे. कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य सहचिंतन की कला का विकास करना होना चाहिए। सहचिंतन का अभिप्राय है साथ मिलकर सोचना अर्थात् अंग्रेज, अरब या रूसी के रूप में हमारे जो अलग–अलग स्वार्थ जुड़े हुए हैं उनकी हम पूर्णतया तिलांजली दे दें। स्वतन्त्रता सहचिंतन का सार है। हम सभी को अपने–अपने विचारों, पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर एक साथ आना होगा और इस मुक्ति में शामिल होना होगा।

अकादमिक शिक्षा के साथ संस्कारों की शिक्षा – जे. कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य अकादमीय विषयों की जानकारी देना तो है ही साथ ही इसका उद्देश्य संस्कारों की शिक्षा देना भी होना चाहिए।

जो होना चाहिए' के बजाय 'जो है' उसको समझने की शिक्षा – मनुष्य को 'जो है' अर्थात् मौलिक सारभूत को समझने की शिक्षा प्रदान करना शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए। रोजमर्रा जिंदगी से जुड़ी समस्याओं को समझने तथा उनका सामना करने की सूझ उत्पन्न करना शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए। जे. कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा को आदर्शवादी न होकर यथार्थवादी होना चाहिए।

जीवन–मूल्यों की खोज में सहायक – जे. कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो व्यक्ति को पुरानी गलत परम्पराओं को तोड़कर नये तथ्यों को अपनाने में सहायक हो। ऐसे मनुष्यों का निर्माण करना जो जीवन–मूल्यों के आधार पर संसार को समान समझे।

आत्मबोध पैदा करने वाली शिक्षा – जे. कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्ष ऐसी होनी चाहिए जो व्यक्ति को स्वयं के बारे में जानने में मदद करे। अपने विचारों को सजग व स्पष्ट रखना ये गुण प्रत्येक व्यक्ति में होने चाहिए। व्यक्ति को स्वयं के बारे में पूर्ण ज्ञान होगा तभी वह दूसरों को भी समझ पायेगा। इसलिए शिक्षा का उद्देश्य आत्मबोध पैदा करना होना चाहिए। वास्तविक शिक्षा वह है जो व्यक्ति को आत्मज्ञान से पूर्ण करे। जब व्यक्ति को आत्मज्ञान होता है तो भय पैदा करने की शक्ति समाप्त हो जाती है और तभी यथार्थता संभव होती है। केवल बोध ही मनुष्य के लिए शांति और सुख ला सकता है।

जीवन की अखंड प्रक्रिया का ज्ञान प्रदान करना –जे. कृष्णमूर्ति गेस्टाल्टवादियों की तरह जीवन की संपूर्णता को समझने वाली शिक्षा पर बल देते हैं। जिस शिक्षा का संबंध केवल मनुष्य के किसी अंश से है न कि सम्पूर्ण मनुष्य से, वह अनिवार्यतः द्वंद्व और कष्ट को बढ़ाएगी।

बालक में सृजनशील प्रज्ञा विकसित करना – जब हम किसी परम्परा के अनुरूप बनते हैं, तब हम शीघ्र किन्हीं आदर्शों की नकल भर बनकर रह जाते है। नकल केवल भय पैदा करती है और भय सृजनशील चिंतन को नष्ट कर देता है। भय मन तथा हृदय को स्फूर्ति विहीन बना देता है, और परिणामस्वरूप हम जीवन के समूचे अभिप्राय के बारे में सजग नहीं रह पाते। बालकों में नयी वस्तुओं, परम्पराओं इत्यादि को विकसित करने की सृजनात्मकता उत्पन्न करनी चाहिए।

व्यक्ति और व्यक्ति तथा व्यक्ति और समाज के मध्य उचित संबंध का संवर्द्धन करना– जे. कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति का व्यक्ति व समाज के साथ उचित संबंध स्थापित करना होना चाहिए। जब व्यक्ति, व्यक्ति व समाज के साथ प्रेमपूर्वक संबंध बनाकर चलेगा तभी संसार का विकास संभव है।

हृदय में प्रेम उत्पन्न करने वाली शिक्षा – अपनी जिम्मेदारी के समझने के लिए हमारे हृदय

Scanned by CamScanner